ECHOES
INDIA
श्री राम चंद्र मिशन
सितम्बर २०१४ खंड ७, अंक ५

मणपाक्कम से समाचार

जुलाई २०१४

शुक्रवार, ४ जुलाई: द्वारका अपार्टमेन्ट्स का भ्रमण: गुरुदेव ने कमलेश भाई को, जो कि एक सप्ताह से अधिक समय से फ्लू से पीड़ित थे, देखने के लिये जाने का निश्चय किया । गुरुदेव उनके अपार्टमेन्ट कॉम्प्लेक्स की ओर, जो कि आश्रम के ठीक पीछे है, गोल्फ कार्ट में गये । रास्ते में कई बार उन्होंने अभ्यासियों के अभिवादन, प्रश्न, समस्याओं आदि पर प्रतिक्रिया देने के लिये अपनी गति धीमी की ।

जैसे ही गुरुदेव लिफ्ट से बाहर आये, कमलेश भाई ने उनका अभिवादन किया । गुरुदेव कमलेश भाई के घर में लगे हुए चित्रों, विशेषकर बाबूजी महाराज के चित्र, को देखकर बहुत आनन्दित हुए । वहाँ पर भगवान बुद्ध की एक मूर्ति भी थी जो कुछ-कुछ भगवान कृष्ण जैसी दिखती थी; गुरुदेव को बताया गया कि यह 'बुद्ध-कृष्ण'हैं । गुरुदेव थोड़े समय के लिये हॉल में बैठे और इस दौरान कुछ अभ्यासी उनके चारों ओर बैठे रहे । गुरुदेव ने यह टिप्पणी की, "जिस प्रकार मधुमक्खियाँ फूल के चारों ओर मँडराती हैं, उसी प्रकार अभ्यासी सदैव मुझे घेरे रहते हैं।" इसके बाद हुई अनौपचारिक चर्चा में उन्होंने उन घटनाओं का जिक्र किया, जो उनकी यूरोप यात्रा के समय घटित हुई थीं । एक अवसर पर वह कार द्वारा कहीं जा रहे थे कि एक अभ्यासी अपना बैग भूल गया, तभी इस प्रस्थान को रोकने के लिये दो और घटनायें घटीं । उन्होंने तुरन्त वहीं पर यात्रा निरस्त करने का निर्णय लिया । परिणामस्वरूप बाद में कई सकारात्मक घटनायें घटित हुईं । गुरुदेव के जीवन से यह उदाहरण हैं, जिनसे हम शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं ।

कमलेश भाई के घर के बाद, गुरुदेव कॉम्प्लेक्स के प्रत्येक अपार्टमेन्ट में, जिन सभी में अभ्यासी रह रहे थे, गये । वह आगे जाने से पहले प्रत्येक अपार्टमेन्ट में थोड़ी देर के लिए रुके और प्रत्येक बार उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया । हाल के दिनों में, गुरुदेव यह कहते हुए काफी बेचैन से रहे हैं कि "मुझे अपने स्थान पर बहुत लम्बे समय के लिये रोक दिया गया है।" अत: यह भ्रमण उनके लिये स्वागत योग्य परिवर्तन था; यद्यपि जब वह कॉटेज में वापस आये वह काफी थके हुए थे और उन्हें आराम करना पड़ा । गुरुदेव की यात्रा करने की और बाहर जाने की गहन इच्छा के बारे में बात करते हुए प्राय: कॉटेज में आजकल प्रसिद्ध कथन, "जीवात्मा तत्पर है, लेकिन शरीर अशक्त है" उद्धरित किया जाता है ।

रविवार, ६ जुलाई: पियानो: नाश्ता करने एवं समाचार पत्र पढ़ने के बाद, गुरुदेव काटेज से बाहर आये और कुछ समय के लिये धूप में बैठे । फ़िर उन्होंने एक भाई से, जो कि पियानो बजाते हैं, सुनने की इच्छा व्यक्त की । जब इस भाई ने संगीत के कई अंश बजाये तो गुरुदेव उनको ध्यान से सुनते हुए और स्पष्टत: उनका आनन्द लेते हुए हॉल में बैठ गये । इसके बाद एक बालिका ने भी, जो

ओमेगा स्कूल में पढ़ती है, पियानो बजाया । गुरुदेव इस बात से बहुत खुश थे कि हमारे अभ्यासी इतना अच्छा पियानो बजा सकते हैं ।

उन्होंने कहा, "मैं हमेशा से एक पियानो खरीदना चाहता था, परन्तु ऐसा कभी न हो सका । एक पियानो यहाँ पर होता तो सच में बहुत अच्छा होता।" अनेक अभ्यासी उत्सुकता के साथ आगे आए और उन्होंने कई सुझाव दिये; तथा कुछ ही दिनों में एक पियानो खरीद लिया गया और उसे कॉटेज़ में उचित स्थान पर रख दिया गया । गुरुदेव ने जब वाद्ययंत्र को देखा तो प्रसन्नता उनके चेहरे पर झलक रही थी । एक अभ्यासी ने गीतों की कुछ बन्दिशें बजायी, फ़िर गुरुदेव ने भी कुछ संगीत के स्वर बजाये । उन्होंने विस्तार से बताया कि इसे कहाँ रखना चाहिये तथा इस बात पर ज़ोर दिया कि पियानो को ठीक प्रकार से ढका जाये और इसकी सुरक्षा की जाये । उन्होंने कहा कि अभ्यासी जब भी चाहें आकर इसे बजा सकते हैं । अगले कुछ दिनों तक कई अभ्यासी आये तथा गुरुदेव ने उनका पियानो बजाना सुना ।

शनिवार, १२ जुलाई: गुरु पूर्णिमा: प्रसाद वितरण के पश्चात् गुरुदेव बड़ी संख्या में अभ्यासियों से, जो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, मिलने के लिये तैयार थे । प्रारम्भ में वे सभी क्रम से आते रहे और गुरुदेव ने सभी को एक-एक कर आशीर्वाद दिया । लेकिन अनेकों बार मना करने के बाद भी अभ्यासी गुरुदेव के चरण छूते रहे । गुरुदेव को थकान होने लगी और उन्होंने कहा कि यदि अभ्यासी उनसे सत्संग करवाना चाहते हैं तो वे अब और आना बंद कर दें, परन्तु लोग पंक्ति में आगे को धक्का लगाते रहे । जब तक यह समाप्त हुआ, गुरुदेव ५०० से अधिक लोगों से मिल चुके थे । फ़िर वे ध्यान कक्ष में गये और लगभग ५० मिनट का सत्संग कराया । गुरुदेव के वापस कॉटेज़ में जाने के बाद भी ध्यान कक्ष में भजन होते रहे ।

बुधवार, १६ जुलाई: गुरुदेव अस्वस्थ: सप्ताह के आरंभ से ही गुरुदेव स्वस्थ नहीं थे । उन्हें लगातार खांसी हो रही थी और संक्रमण (इनफैक्शन) भी हो गया लगता था; इसलिए कॉटेज में किन लोगों को अंदर जाने की अनुमति दी जाये, इस पर कड़ा नियंत्रण था । दो-चार दिन में ही गुरुदेव के स्वास्थ में सुधार होने लगा और उन्होंने पुन: लोगों से बातचीत करना प्रारम्भ कर दिया।

रविवार, २० जुलाई: कमलेश भाई ने सत्संग कराया और फ़िर गुरुदेव के स्वास्थ्य के विषय में जानकारी दी । सहज-संदेश में अभ्यासियों के लिये एक सूचना भेजी गयी जिसमें उन्हें बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई आने के स्थान पर तिरुपुर भण्डारे में जाने के लिये प्रोत्साहित किया गया था ।

मंगलवार, २२ जुलाई: गुरुदेव का जन्म-कुण्डली पर आधारित जन्म दिवस: हिन्दू कलेण्डर के अनुसार यह दिन गुरुदेव का जन्म दिवस था, लेकिन उन्हें फ़िर से बुखार आ गया था और वह अभ्यासियों से मिलने की स्थिति में नहीं थे और न ही बिस्तर से उठने की हालत में थे। कमलेश भाई ने प्रातः ९:०० बजे का सत्संग कराया; तदोपरांत ए.पी.दुरई द्वारा लिखित पुस्तक 'लैटर टू माई क्रि१अचियन फैमिली' का विमोचन किया गया।

भारत के केन्द्रों में परमप्रिय गुरुदेव का जन्मदिन समारोह

हमारे परमप्रिय गुरुदेव का ८८वाँ जन्मदिन भारतवर्ष के सभी केन्द्रों पर उन लोगों के लिये, जो तिरुपुर भण्डारे में सम्मिलित नहीं हो पाये, मनाया गया । सभी जगह सत्संग, भजन, बच्चों के लघु नाटक व प्रस्तुतियाँ तथा अभ्यासियों द्वारा वार्तायें कार्यक्रमों के प्रमुख आकर्षण थे ।

समारोह में जिस दिव्य आशीर्वाद और कृपा का अनुभव किया गया, उसका वर्णन बड़ोदा,भीलवाड़ा, कोलकाता,खड़गपुर,जोधपुर, श्रीगंगानगर, नवसारी, वलसाड,गुलबर्गा और आनन्द से प्राप्त रिपोर्टों से मिलता है ।

भीलवाड़ा

वलसाड

इलाहाबाद

सहारनपुर

घाटमपुर

गुलबर्गा

लखनऊ

खड़गपुर

भारत के केन्द्रों में परमप्रिय गुरुदेव का जन्मदिन समारोह:

जोधपुर

श्री गंगानगर

श्रीनगर

बच्चों की सहभागिता

बच्चे हमारे परिवार के सदस्य हैं और जैसे जैसे वे सहज मार्ग परिवार में बड़े होते हैं, वे हमारे आश्रम की गतिविधियों में भाग लेना सीखते हैं और हमारे गुरुदेव की शिक्षाओं के मूल्यों एवं गुणों को सूक्ष्म रूप से आत्मसात कर लेते हैं । वे अनुभव किये गये प्रेम को गीत एवम् नृत्य की प्रस्तुति के माध्यम से व्यक्त करना सीखते हैं । वे इन समारोहों के वातावरण में जान डाल देते हैं और हम सभी को प्रेम और आनन्द से विभोर कर देते हैं ।

कोलकाता

वलसाड

वडोदरा

गुलबर्गा

लखनऊ

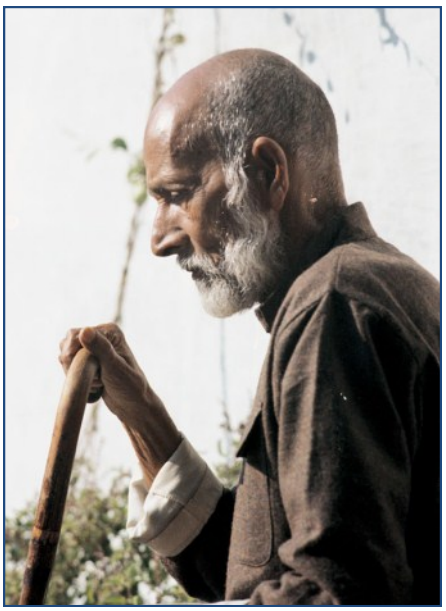

"मैं उस पर मुक्त हृदय से न्यौछावर करने को तैयार हूँ, जो उसे लेने लायक बनने को तैयार हो । मगर आज तक ऐसा कोई दिखाई नहीं देता, जो अपना पात्र लबालब भरवाने आया हो । मैंने बहुधा अभ्यासियों के सामने, मेरे पास जो कुछ भी है, सारा लूट लेने को और बदले में, जो कुछ उनके पास है, वह मुझे दे देने का प्रस्ताव किया है । उचित विनिमय तो कोई डकैती नहीं है ?"

बाबूजी महाराज
राम चंद्र की संपूर्ण कृतियाँ, खंड २, पृष्ठ १३

संयुक्त सचिव का हुबली, कर्नाटक का दौरा

मिशन के संयुक्त सचिव भाई ए० पी० दुरई ने ८ से १० अगस्त तक हुबली का दौरा किया ।

८ तारीख की सुबह वे नये आश्रम की भूमि, जो कि शहर से १२ किलोमीटर दूर है, को देखने गये । उन्होंने दोपहर को उन अभ्यासियों से, जो उस योजना पर कार्य कर रहे हैं, वार्ता की और उन्हें भूमि के विकास से सम्बन्धित दिशा-निर्देश दिये । उन्होंने अभ्यासियों से उनके द्वारा खरीदे गये भू:खण्डों पर शीघ्रातिशीघ्र आवास निर्माण करने को कहा, क्योंकि आवासीय कालोनी के बिना शहर से इतनी दूर आश्रम की अवधारणा व्यर्थ हो जायेगी । आश्रम की भूमि पर एक अस्थायी ध्यान कक्ष का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा गया, जिससे अभ्यासियों का बारम्बार आगमन सुगम हो सके ।

भाई दुरई ने शाम के समय बहन गीता रेशमी के निवास पर एकत्रित आकांक्षियों के एक समूह को सहजमार्ग के मूल तत्वों के विषय में विस्तार से बताया ।

९ अगस्त के दिन उन्होंने धारवाड़ स्थित कर्नाटक विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों के स्नातकों के एक सेमिनार को सम्बोधित किया । उन्होंने स्नातकों को सहजमार्ग दर्शन के विषय में विस्तार से बताया और अपने जीवन के वास्तविक अनुभवों का जिक्र करते हुये जीवन में सादगी अपनाने और गुमराह करने वाले प्रलोभनों से बचने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने आध्यात्मिक साधना से प्राप्त होने वाले आत्मबल तथा आत्म सम्मान में होने वाली वृद्धि पर विशेष जोर दिया ।

उसी दिन उत्तरी कर्नाटक ज़ोन के अंचल प्रभारी डाक्टर गजेन्द्र सिंह ने हुबली से ४८ किलोमीटर दूर मुंडगोड नामक स्थान पर एक सरकारी कालेज में ओपन हाउस का संचालन किया । १५० से अधिक वरिष्ठ छात्रों और महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने ओपन हाउस में भाग लिया । अपनी वार्ता में उन्होंने ध्यान की भूमिका, वास्तविक प्रेम,वास्तविक प्रसन्नता और आन्तरिक मार्गदर्शन की आवश्यकता पर जोर दिया ।

शाम के समय बहन गीता कामत के निवास पर एक अनौपचारिक बातचीत के दौरान भाई दुरई ने सहजमार्ग साधना में उचित अभ्यास के महत्व तथा अभ्यासियों के बीच भाईचारे की आवश्यकता पर बल दिया ।

रविवार को सत्संग के पश्चात् अभ्यासियों के लिये भाई दुरई द्वारा चुने गये विषयों पर एक सामूहिक परिचर्चा आयोजित की गयी । चुने गये विषयों में से कुछ निम्नानुसार हैं:

१. हमारा व्यावसायिक और निजी जीवन ऐसा हो, जो अन्य व्यक्तियों को सहजमार्ग में सम्मिलित होने के लिये आकर्षित करे|

२. हम अपने नये आश्रम का किस तरह उपयोग करना चाहते हैं ?

३. आध्यात्मिक जीवन और भौतिक जीवन में विभाजन कृत्रिम है|

दोपहर के भोजन के पश्चात् अभ्यासियों के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया, जिसका समापन ४ बजकर ३० मिनट पर सत्संग के साथ हुआ । उसी रात भाई दुरई बैंगलोर के लिये रवाना हो गये । सभी अभ्यासियों ने प्रसन्नता व्यक्त की क्योंकि वे सभी उनके इस आगमन से अत्यधिक लाभान्वित हुए थे |

भोपाल में यू-कनैक्ट

यू-कनैक्ट कॉलेज छात्रों के लिये हमारे मिशन द्वारा आरम्भ किया गया एक कार्यक्रम है । मध्य प्रदेश अंचल में इन्दौर और भोपाल में इसका कार्य आरम्भ हो चुका है तथा धीरे-धीरे अन्य केन्द्रों में भी फैल रहा है ।

इन्दौर केन्द्र में इस कार्यक्रम के प्रारम्भिक परीक्षण ८ सप्ताह के लिये आयोजित किये गये । एक कॉलेज ने सितम्बर माह से इसे आरम्भ करने हेतु सहमति प्रदान की ।

१३ जुलाई को इन्दौर से आये प्रशिक्षित स्वयंसेवकों के एक समूह ने भोपाल में स्वयंसेवकों के लिये एक अनुकूलन कार्यक्रम का आयोजन किया । उन्होंने स्वयंसेवकों के साथ अपने अनुभवों और जानकारी को बाँटा ।

भोपाल के स्वयंसेवकों के साथ-साथ आस-पास के केन्द्रों जैसे विदिशा, मन्डीदीप, रायसेन, सीहोर और नरसिंहगढ़ से आये कुल ६३ अभ्यासियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया ।

ज़ोनल समन्वयक यामिनी करमरकर ने अपने समूह के साथ, जिसमें राजेश रावरकर, निर्मल दगडी और इन्दौर से रमाकान्त अग्रवाल शामिल थे, प्रतिभागियों से बातचीत की और उन्हें यू-कनैक्ट के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया ।

इस समूह ने स्वयंसेवकों को संस्थाओं और कालेजों में जाने से पहले अपने केन्द्रों में प्रयोगात्मक सत्र आयोजित करने के लिये प्रोत्साहित किया । छात्रों के आत्म-विकास से सम्बन्धित पाठ्यक्रम पर भी दो लगातार सत्रों मे विचार-विमर्श किया गया ।

केन्द्र प्रभारी पंकज माथुर ने यह विश्वास दिलाया कि स्वयंसेवकों का दल शीघ्र ही इस कार्य का शुभारम्भ करेगा । इसके साथ ही सत्र का समापन हुआ ।

युवाओं के लिये कार्यक्रम

युवाओं को प्रेरित करना, इन्दौर

इन्दौर केन्द्र में युवाओं के लिये "दिल कहता है" शीर्षक से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया । विकास शियुरकर जो कि पेशे से एक चिकित्सक हैं, एक प्रशिक्षक हैं और समीप के केन्द्र देवास के केन्द्र प्रभारी भी हैं,ने जीवन के अपने अनुभवों को बताया।

कार्यक्रम को एक वार्तालाप सत्र तथा उसके पश्चात् एक प्रश्नोत्तर सत्र के रूप में आयोजित किया गया था। राजेश रावरकर ने भाई विकास का साक्षात्कार (इंटरव्यु) लिया और उनसे उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के बारे में - उनके गुरुदेव के साथ अनुभव, एक युवा अभ्यासी के रूप में अनुभव तथा एक सरकारी कर्मचारी के रूप में जहाँ भ्रष्टाचार एक रिवाज़ बन गया है उनके द्वारा जिन समस्याओं का सामना किया गया उनके बारे में - अनेक प्रश्न पूछे । भाई विकास ने अपने अनुभव और अपनी भावनायें व्यक्त की तथा यह भी बताया कि कैसे सहजमार्ग अभ्यास उनके जीवन में उनकी सहायता कर रहा है । उनके द्वारा दिये गये अद्भुत संदेशों में एक यह था कि जैसे-जैसे हम विकसित होते जाते हैं, गुरुदेव की कृपा से हमारे अन्दर अपने आस-पास की हर वस्तु और हर व्यक्ति के प्रति सहनशीलता में वृद्धि होती जाती है । उन्होंने श्रद्धा, गुरुदेव के प्रति प्रेम और सेवा भावना के विषय में भी बताया ।

९० मिनट के इस साक्षात्कार के पश्चात् युवा अभ्यासियों ने कई और प्रश्न पूछे जो कि बहुत व्यावहारिक प्रकृति के थे ।

कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य मिशन के युवाओं को उनकी आध्यात्मिकता से सम्बन्धित छोटी-छोटी समस्याओं को अपने अग्रजों के अनुभवों से सीख लेकर हल करने में सहायता करना था । इससे उन्हें सहजमार्ग को अपने कार्य/अध्ययन क्षेत्र में ले जाने में भी सहायता मिलेगी ।

एक युवा अभ्यासी निमेश पालीवाल ने कार्यक्रम का संचालन किया और अविनाश ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया । कार्यक्रम में ४० से अधिक युवा अभ्यासी उपस्थित थे । इस तरह के सत्र मासिक आधार पर करने की योजना बनायी गयी ।

मणपाक्कम, तमिलनाडु

चैन्नई के लगभग ५० और विदेशों के कुछ युवा अभ्यासियों के लिये मणपाक्कम में ३ अगस्त को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

प्रत्येक प्रतिभागी को एक कार्ड दिया गया जिस पर एक मूल्य (नैतिक गुण) लिखा हुआ था । कार्यक्रम का आरम्भ दिनांक २५ सितम्बर २०१२ के व्हिस्पर्स के साथ हुआ । इसके बाद संकोच निवारण के लिये एक सत्र हुआ जिसमें प्रतिभागियों ने अपना परिचय दिया और अपने कार्ड पर लिखे हुये मूल्य को जोर से सबको सुनाया, जिससे कि वे स्मृति-खेल (मेमोरी गेम) के लिये उसे याद रख सकें । इसके बाद उन्होंने कुछ अनूठी बातें बतायी, जो उन्होंने सहजमार्ग से जुड़ने के बाद अनुभव की थीं । प्रत्येक प्रतिभागी को सहजमार्ग के दस नियमों को सुनाने की और जहाँ तक सम्भव हो उन्हें सही रूप में कहने की कोशिश करने के लिये कहा गया ।

'नियम परिवार की खोज' नामक खेल का उद्देश्य प्रत्येक नियम के साथ जुड़े हुये सद्गुणों के समूह को पहचानना था । प्रत्येक प्रतिभागी को अपने कार्ड पर लिखे हुये गुण के साथ सम्बन्धित नियम को पहचानना था और साथ ही उसी नियम से सम्बन्धित सदस्यों को खोजना था ।

प्रत्येक दल ने 'अभिव्यक्ति का तरीका' विषय पर चर्चा की । इस गतिविधि ने उन बिन्दुओं को समझने की आवश्यकता पर बल दिया जो किसी नये सदस्य को सहज मार्ग से परिचित कराते समय ध्यान में रखे जाने चाहिये । प्रतिभागियों को आत्मविश्लेषण करने और अपने विचार व्यक्त करने के लिये पर्याप्त समय दिया गया ।

'लक्ष' पर केन्द्रित होने के महत्व को एक डार्ट खेल के द्वारा दर्शाया गया, जिसका प्रतिभागियों ने भरपूर आनन्द लिया । चाय और नाश्ते के बाद दो वीडियो दिखाये गये: 'फाईव टिप्स फार बिल्डिंग ऑथेन्टिक सेल्फ-डिसिप्लिन' और हॉवार्ड मार्टिन की वार्ता, 'इन्गेज़िंग दि हार्ट्स इन्टैलिजैन्स'।

कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी ने अपने विचार व्यक्त किये और सुझाव दिये तथा फीडबैक अंकित किया गया ।

मूल्य शिक्षा

व्ही.बी.एस.ई. कार्यक्रम से हम सभी परिचित हैं जिसे एक दशक से भी पहले वर्ष २००० में, मिशन के कई केन्द्रों में लागू किया गया था । इस अवधि में १०० से ज्यादा स्कूलों ने इसमें भाग लिया और पूरे भारतवर्ष में १०,००० से अधिक अध्यापकों को मिशन ने प्रशिक्षित किया । गुरुदेव चाहते थे कि इस कार्यक्रम की समीक्षा करके इसमें सुधार किया जाये ।

प्राप्त अनुभव के आधार पर और विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त फ़ीडबैक को सम्मिलित करते हुए, व्ही.बी.एस.ई. दल ने इसमें कुछ परिवर्तन किये हैं । इस कार्यक्रम को अब 'मूल्य शिक्षा' (वैल्यूज़ एज्यूकेशन) का नाम दिया गया है और अब इसे कक्षा ८ से १२ तक के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है। एक कक्षा के लिए २० सत्र किये जायेंगे जिसमें छ: प्रमुख मूल्य (गुण) - सच्चाई, विनम्रता, साहस, उत्तरदायित्व, प्रेम और स्वतन्त्रता सम्मिलित हैं । ये कक्षायें, जो कि अभ्यासी स्वयंसेवकों द्वारा संचालित की जानी हैं,नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगी ।

छात्रों को प्रेरित करने और उनके साथ सहानुभूति बनाए रखने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, अध्यापन विधि संवादात्मक रखी गई है ताकि कक्षा अधिक रोचक और आकर्षक लग सके । इसमें वीडिओ, कहानियाँ और अभ्यास के साथ-साथ विचारोद्दीपक विस्मयबोध भी रखे गये हैं।

मई २०१४ से प्रारम्भ होने वाले शिक्षा सत्र में, नौ केन्द्रों से पन्द्रह स्कूलों ने इस नये मूल्य शिक्षा कार्यक्रम को लागू करने की पहल की है । ये केन्द्र हैं - रेवा (२ स्कूल), वडोदरा (३ स्कूल),हैदराबाद (२ स्कूल), त्रिची (२ स्कूल), मुम्बई (१ स्कूल),चैन्नई (१ स्कूल), दिल्ली (२ स्कूल) और सूरत (१ स्कूल)।

मूल्य शिक्षा दल (टीम) में सम्मिलित हैं - शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षण के लिए रन्जनी बालाजी, केन्द्रों के साथ समन्वय के लिए कांति पप्पू तथा शिक्षण सामग्री के आई.टी. सम्बन्धित प्रशासन के लिए ज्योति चेरेड्डी । केन्द्र स्तरीय कई समन्वयक एवं स्वयंसेवक भी इसमें शामिल हैं । आने वाले शिक्षा सत्र में इस कार्यक्रम को आरम्भ करने के लिये कुछ केन्द्रों व स्कूलों का चयन पहले से ही कर लिया गया है । जो केन्द्र इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करने के इच्छुक हैं वे कांति पप्पू से इस पते पर सम्पर्क कर सकते हैं - vbe@shpt.in

केन्द्रों से प्राप्त अनुभव

वडोदरा

आरम्भिक परियोजना होने के कारण, 'मूल्य शिक्षा' कक्षायें बड़ोदा हाई स्कूल ओ.एन.जी.सी. में कक्षा ८ के चार सेक्शन में तथा बड़ोदा हाई स्कूल अलकापुरी में कक्षा ९ के २ सेक्शन में प्रारम्भ की गयी थीं । दस स्वयंसेवकों का एक दल पाँच सहायकों के साथ पढ़ाने में लगा हुआ है । वे कक्षाओं में संचालित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा करने के लिये हर सप्ताह मिलते हैं । तेजस विद्यालय, गोत्री ने पाठ्यक्रम को अपनाया है और स्कूल के अध्यापकों ने पढ़ाने का कार्य ले रखा है। स्कूल के प्रशासन का सहयोग वास्तव में सराहनीय है। विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया सकारात्मक है और वे इन कक्षाओं का आनन्द उठा रहे हैं ।

अलकापुरी

बी एच एस, ओ.एन.जी.सी.

मुम्बई

महाराष्ट्र में, बिलाबोंग इन्टरनेशनल हाई स्कूल और जे एच अम्बानी स्कूल, नागोथाने में कक्षा ८ के लिए ये सत्र आयोजित किए जा रहे हैं । दोनों ही स्कूलों में यह कार्यक्रम मिशन के स्वयंसेवकों की सहायता से किया जा रहा है । दोनों स्कूलों के कर्मचारी काफ़ी सहयोगी हैं और साथ ही वे बच्चों की सहभागिता एवं कक्षा में स्वयंसेवकों के साथ बच्चों के दिल खुल जाने की सराहना करते हैं । बच्चे अद्भुत हैं और उनमें संकोच नहीं है । वे संचालित की जा रही गतिविधियों को खुद से सम्बद्ध कर पाते हैं । उनके लिये, प्रथम मूल्य 'सच्चाई' को ग्रहण करना बहुत सरल था । प्रत्येक सत्र में दिये गये कथनों पर उनके अवलोकन, विचार एवं चिन्तन को अंकित करने के लिये एक विधि के रूप में उन्हें डायरी लेखन का सुझाव दिया गया । कक्षा में सदैव ही एक हल्का और खुशनुमा माहौल रहता है। 'मूल्य शिक्षा'दल को,जे.एच. अम्बानीमराठी माध्यम स्कूल के प्राचार्य ने,'मूल्य शिक्षा'कक्षायें हिन्दी या मराठी भाषा में उनके स्कूल में संचालित करने के लिए आमंत्रित किया है।

मुम्बई

नागोथाने

मन्नवरप्पाडु, नेल्लोर ग्रामीण

नेल्लोर केन्द्र के अभ्यासियों ने मन्नवरप्पाडु ग्राम (ग्रामीण नेल्लोर) के पास ३३ एकड़ भूमि ख़रीदी है। इसमें से ५.८५ एकड़ भूमि को अन्य सुविधाओं सहित ध्यान कक्ष के निर्माण के लिए निर्धारित किया गया और शेष भूमि को ३०० भूखंडों में विभाजित किया गया है।

हमारे गुरुदेव की सहृदय स्वीकृति और आशीर्वाद के साथ नेल्लोर की केन्द्र प्रभारी बहन उमा गंगाधर द्वारा ६ अगस्त को सुलोचना सदन, मन्नवरप्पाडु में रसोईघर सह भोजन कक्ष के निर्माण के लिये आधारशिला स्थापन (भूमि पूजन) समारोह का संचालन किया गया । निर्माण की अनुमानित लागत २० लाख रुपये है; ४ लाख रुपये शौचालय ब्लॉक के निर्माण के लिये भी निर्धारित किये गये हैं । समारोह के बाद सत्संग हुआ जिसमें नेल्लोर तथा अन्य केन्द्रों, जैसे कावली, बुचिरेड्डिपालेम, सिद्धिपुरम, गुडूर, वेंकटगिरि, नायडूपेट और पोडलकुर से लगभग २०० अभ्यासी उपस्थित थे । इस शुभ अवसर पर केन्द्र प्रभारी ने स्वैच्छिक कार्य के लिये अभ्यासियों से आगे आने का तथा न्यूनतम सम्भव समय में इस परियोजना को पूर्ण करने के लिये निर्माण प्रक्रिया में अधिकतम सहायता देने का अनुरोध किया।

आंचलिक बैठक, हरियाणा

१७ अगस्त को सोनीपत आश्रम में एक आंचलिक बैठक (अंचल-२१) आयोजित की गयी । अंचल प्रभारी की अध्यक्षता में संपन्न इस बैठक में भाग लेने के लिए सभी प्रशिक्षकों, संयोजकों, फ़ेसिलिटेटर्स, स्वयंसेवकों तथा अंचल के केन्द्र प्रभारियों को आमन्त्रित किया गया था । कार्यसूची के मुख्य बिन्दुओं के अनुसार बैठक को संरचित किया गया था । अंचल प्रभारी सत्य एन. मंडल द्वारा दी गई एक प्रस्तुति में अंचल के भीतर आपसी संपर्क व्यवहार के विभिन्न पहलुओं पर तथा गुरुदेव या कमलेश भाई के साथ सीधे पत्र व्यवहार पर; एवं हमारे मिशन द्वारा निर्धारित संपर्क प्रणाली का अनुशासनबद्ध पालन करने की आवश्यकता पर मार्गदर्शन किया गया । बैठक के दौरान अंचल प्रभारी ने सभी केन्द्र प्रभारियों, प्रशिक्षकों और स्वयंसेवकों से अनुरोध किया कि वे सहज मार्ग के सिपाहियों की तरह कार्य करें ।

ऐसे केन्द्रों में जहाँ प्रशिक्षक उपलब्ध नहीं हैं; रविवार और बुधवार के सत्संगों का संचालन कैसे किया जाये, इस विषय पर एक चर्चा हुई। केन्द्र प्रभारी और प्रशिक्षकों ने गतवर्ष हुई प्रगति, उपलब्धियाँ और सुधार के लिये उनके द्वारा की गयी पहल के बारे में अपने विचार बाँटे । अंचल संयोजकों ने भी अपने-अपने विशिष्ट क्षेत्रों, जैसे प्रशिक्षण और विकास, यू कनेक्ट, क्रेस्ट, मूल्य शिक्षा, निबन्ध लेखन, आई०टी०, अभ्यासी पंजीकरण, स्वैच्छिक सेवायें, एकोज़,इतिहास परियोजना और लेखा-जोखा आदि में हुई प्रगति पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

उदयपुर, राजस्थान

तिरुपुर भंडारे के दौरान कमलेश भाई द्वारा दी गई वार्ता में बताये गये बिन्दु 'अ' पर ध्यान और बिन्दु 'ब' पर सफ़ाई करने के विषय पर ३ अगस्त को उदयपुर केन्द्र में एक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया । केन्द्र प्रभारी ने उपस्थित ३४ अभ्यासियों को इन विधियों के बारे में तथा 'अ' और 'ब' बिन्दुओं की अवस्थिति के बारे में विस्तार से समझाया । इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अभ्यासियों में इन विशिष्ट तकनीकों के विषय में बेहतर समझ का विकास करना था । कार्यशाला के अन्त में अभ्यासियों के शंका समाधान के लिए एक प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन किया गया ।

समाचार झलकियाँ

मुत्थूर

पहला बुधवार सत्संग, मुत्थूर, तमिलनाडु

मुत्थूर तमिलनाडु में एक छोटा शहर है, जो कांगेयम केन्द्र से लगभग १८ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दूर होने के कारण, मुत्थूर के छ: अभ्यासी नियमित रूप से व्यक्तिगत सिटिंग नहीं ले पा रहे थे। अंचल प्रभारी टी०वी० विश्वनाथ राव की सलाह के अनुसार कांगेयम से प्रशिक्षकों ने, सिटिंग देने के लिये, मुत्थूर जाना प्रारम्भ किया। जब अभ्यासियों की संख्या ३० तक बढ़ गयी तो अंचल प्रभारी ने सप्ताह के मध्य में भी वहाँ सत्संग आयोजित करने की सलाह दी। कुछ आवासीय बैठकों सहित पहला बुधवारीय सत्संग अंचल प्रभारी द्वारा ११ जून को शाम ५ बजे संचालित किया गया। मुत्थूर से लगभग ३० अभ्यासी और कुछ अभ्यासी कांगेयम से भी इस में सम्मिलित हुए। सत्संग के बाद, "सहज मार्ग में गुरुदेव, मिशन,पद्धति और लक्ष्य" तथा "सहज मार्ग की आवश्यकता" विषयों पर वार्तायें दी गयीं। पाँच नये आकांक्षियों ने सहज मार्ग अभ्यास प्रारम्भ करने में रुचि दिखायी।

मणिनगर,अहमदाबाद, गुजरात में रविवार का सत्संग

गुरुदेव की अनुमति से अब अहमदाबाद के मणिनगर में काकरिया ताल के पास सिटी सेन्टर में भी रविवारीय सत्संग आयोजित किया जायेगा । यह शहर में निवास करने वाले सभी अभ्यासियों के लिये मध्यभाग में स्थित है और आसानी से पहुँच में आने वाला स्थान है । पहला सत्संग ३ अगस्त को आयोजित किया गया, जिसमें ६० से अधिक अभ्यासी सम्मिलित हुए । इनमें से करीब २० प्रतिशत अभ्यासियों को अनेकों कारणों से रविवार के सत्संग में भाग लेने का अवसर नहीं मिलता था । यह आशा की जाती है कि इस व्यवस्था से उन सभी अभ्यासियों को लाभ प्राप्त होगा जिन्हें रविवार को आश्रम पहुँचने में कठिनाई होती है ।

क्रीड़ा प्रतियोगिता दिवस, अहमदाबाद, गुजरात

१५ अगस्त के दिन अडलज योगाश्रम अहमदाबाद में स्वतन्त्रता दिवस के साथ-साथ क्रीड़ा प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी । सारे अभ्यासी आमंत्रित किये गये थे और सभी ने इसमें सहभागिता की । कार्यक्रम ७.३० बजे सुबह के सत्संग के साथ प्रारम्भ हुआ तथा जलपान के बाद प्रात: ९.३० बजे झंडा फ़हराया गया ।

खेल गतिविधियाँ प्रात: १० बजे से दिन में १ बजे तक आयोजित की गयीं, जिसके बाद दोपहर का भोजन हुआ । खेलों में म्यूज़िकल चेयर, कैरम, टेबल टेनिस,रस्सी-कूद,एक-मिनट का खेल, मंज़िल दिखाओ, नींबू और चम्मच, बोरी दौड़ तथा युगल दौड़ सम्मिलित थे । सभी सहभागियों ने कार्यक्रम का खूब आनन्द लिया ।

वाराणसी

अहमदाबाद

अखिल भारतीय निबन्ध लेखन कार्यक्रम पर कार्यशाला २०१४, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

यह अंचल स्तरीय (१२ डी) वर्कशॉप ५ जुलाई को स्वयं-सेवकों को कार्यक्रम की प्रमुख बातें और निर्देशों से अवगत कराने हेतु आयोजित किया गया । अंचल के २३ केंद्रों और उपकेंद्रों से लगभग ६० स्वयं सेवकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया । अंत में निबन्ध कार्यक्रम की सामग्री वितरित की गयी ।

लालपनिया, झारखण्ड

६ जुलाई के दिन 'ध्यान' मौड्यूल पर जी.आई.टी.पी. सत्र का संचालन किया गया । इसमें २२ अभ्यासियों ने भाग लिया । कार्यक्रम काफ़ी प्रभावशाली तथा सभी प्रतिभागियों के लिये ज्ञानवर्धक था। सभी ने अनुभव किया कि यह कार्यक्रम गुरुदेव द्वारा उनके लिये एक भेंट है। इसके अतिरिक्त सभी अभ्यासियों के बीच में भाईचारा भी विकसित हुआ।

लालपनिया

संदेश का प्रसार

शोलावंधन, तमिलनाडु

३० जुलाई २०१४ को शोलावंधन केन्द्र में एक खुले सत्र का आयोजन किया गया, जिसका संचालन मंडल प्रभारी (टी एन-२ डी) भाई रामनाथन तथा दो अन्य प्रशिक्षकों ने किया । इस कार्यक्रम में अभ्यासियों एवं नवागन्तुकों को मिलाकर ५० से अधिक लोगों ने भाग लिया । कार्यक्रम का आरम्भ साधना के तथा प्राचीन काल में इसके उद्गम के औपचारिक परिचय से हुआ । लोगों ने संवादात्मक सत्र में सक्रियता से भाग लिया, जो बहुत ही सार्थक रहा, क्योंकि नवागन्तुक सहज मार्ग पद्धति की विशेषताओं को और अधिक जानने के इच्छुक थे ।

राजकीयकोषागारअहमदाबाद, गुजरातमेंसेमिनार

राजकीय कोषागार के कर्मचारियों को मिशन की जानकारी देने के लिये एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया । भाई जिग्नेश को एक वक्ता के रूप में ३० मिनट का समय दिया गया । विभाग प्रमुख से प्राप्त अनुमति एवं कर्मचारियों के पास उपलब्ध सीमित समय के अनुसार उन्होंने पद्धति की प्रभावोत्पादकता को विस्तार से समझाया । कई आकांक्षियों ने मिशन में शामिल होने तथा ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की ।

मैंगलोर, कर्नाटक

सोमवार ११ अगस्त २०१४ को बीसेन्ट फ़र्स्ट ग्रेड इवनिंग कालिज मैंगलोर में ९० विद्यार्थियों एवं ५ संकाय सदस्यों के लिये एक खुले सत्र का आयोजन किया गया । श्रोताओं को आध्यात्मिकता का महत्व एवं सहज मार्ग की अनूठी विशेषताओं के बारे में विस्तार से समझाया गया । कॉलेज के ११ विद्यार्थियों एवं एक प्राध्यापक ने मिशन में शामिल होने की इच्छा प्रकट की । इच्छुक लोगों को कालेज परिसर में ही व्यक्तिगत सिटिंग देने की व्यवस्था की गयी ।

कुमारीकुन्ठा, तेलंगाना में नया केन्द्र

करीमनगर जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्र में स्थित कुमारीकुन्ठा में अब एक नया केन्द्र स्थापित हो गया है। वर्ष १९९२ से इस गाँव के ४ अभ्यासियों को निकटवर्ती पेड्डापल्ली केन्द्र में सत्संग एवं व्यक्तिगत सिटिंग के लिये जाना पड़ता था । मार्च २०१४ में अंचल (१ ए) प्रभारी मधु कोटापल्ली ने, पेड्डापल्ली केन्द्र की यात्रा के दौरान कुमारीकुन्ठा के अभ्यासियों से मुलाकात की एवं इस स्थान पर नये केन्द्र की आवश्यकता को स्वीकार किया । अत: रविवारीय सत्संग आरंभ करने की अनुमति प्रदान की गयी। ९ अगस्त को अपने हाल के भ्रमण के दौरान अंचल प्रभारी यह देख कर उत्साहित थे कि ५ महीने से भी कम समय में इस गाँव के अभ्यासियों की सँख्या २४ तक पहुँच गयी है । सब लोगों ने यह भी बताया कि इस स्थान का वातावरण आध्यात्मिक रूप से बहुत ही सूक्ष्म एवं आकर्षित करने वाला था।

हुबली आश्रम, कर्नाटक

प्रकाश का केन्द्र

हुबली, उत्तर कर्नाटक में तेजी से विकसित हो रहे नगरों में से एक है जो सड़क मार्ग, रेल मार्ग एवं घरेलू वायु मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है । २० कि.मी. दूर स्थित इसका जुड़वाँ शहर धारवाड़ जिला मुख्यालय है ।

हुबली केन्द्र का आरम्भ १९९७ में दो अभ्यासियों के साथ उस समय मिशन के सचिव सर्नाड जी के प्रयासों से हुआ था । सत्संग भाई पवसकर के घर में होता था और बाद में केन्द्र का अपना आश्रम होने तक महिला विद्यापीठ एवं बैंकर्स क्लब में होने लगा । उस समय करीब पचास अभ्यासी हुआ करते थे।

पूज्य गुरुदेव ने ५ अप्रैल २००२ को आश्रम भूमि के पंजीकरण हेतु हुबली का भ्रमण किया । वे रेलमार्ग से आये और उन्होंने क्षेत्र में आध्यात्मिकता का प्रकाश फ़ैलाने हेतु स्वयं का आश्रम होने पर केन्द्र को आशीर्वाद दिया । इस अवसर पर उन्होंने कहा "प्रत्येक बार जब भी हम अपने महान गुरुदेव पूज्य बाबूजी महाराज को एक नया भूमि का टुकड़ा अर्पित करते हैं तो एक अलग आन्तरिक प्रसन्नता होती है । ये उसी प्रकार है जैसे परिवार में किसी बच्चे का जन्म हुआ हो । प्रत्येक आश्रम महान गुरुदेव का दिव्य वास है, जिनकी उपस्थिति को हम आश्रम में आमन्त्रित करते हैं और इन आश्रमों द्वारा ही हम उनके प्रकाश को अनन्त काल तक जीवन्त और उपलब्ध बनाये रखते हैं।"

आश्रम घरेलू हवाई-अड्डे तथा नये बस-स्टैण्ड से करीब २.५ किलोमीटर की दूरी पर है । ध्यान कक्ष, जिसका क्षेत्रफ़ल १४०० वर्ग फ़ुट है, का निर्माण आश्रम भूमि के लगभग ११ सेन्ट भाग पर किया गया है । इसमें लगभग १५० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता है । इसके अतिरिक्त इस आश्रम में रसोईघर, भोजन कक्ष, कार्यालय कक्ष,शौचालय एवं स्नानघर हैं । आश्रम में अनेकों वृक्षों सहित एक सुन्दर बगीचा एवं बच्चों के खेलने की जगह भी है।

पूरे दिन का कार्यक्रम महीने के दूसरे रविवार को रखा जाता है । सौ से अधिक अभ्यासी रविवारीय सत्संग में सम्मिलित होते हैं । इस केन्द्र में कर्नाटक राज्य के लिये कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किये गये हैं जिसमें शिक्षकों के लिये व्ही.बी.एस.ई. प्रशिक्षण कार्यक्रम, संकाय विकास कार्यक्रम तथा प्रकाशन कार्यशाला सम्मिलित है । इस केन्द्र की अन्य गतिविधियों में नियमित अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम, निबन्ध कार्यक्रम समन्वयन तथा मिशन प्रकाशन एवम् परिचय पत्रों (आइडेन्टिटी कार्ड) का उप -केन्द्रों को वितरण शामिल है ।

हुबली में आश्रम के अस्तित्व में आने के बाद तीन नये केन्द्र नवनगर, नवलगुण्ड और कैगा विकसित हुए हैं । निकटवर्ती स्थानों में नियमित रुप से घरों में बैठकें, खुले सत्र, अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं ।

भविष्य को ध्यान में रखते हुए १४ एकड़ भूमि और खरीदी गयी है, जिसमें पाँच एकड़ भूमि आश्रम के लिये है व नौ एकड़ अभ्यासियों की कालोनी के लिये है । नयी खरीदी गयी जगह वर्तमान आश्रम से करीब १२ किलोमीटर दूर है । मिशन के संयुक्त सचिव भाई ए० पी० दुरई के हाल में भ्रमण के दौरान अभ्यासियों एवं पदाधिकारियों के बीच विस्तृत चर्चा हुई और यह तय हुआ कि अतिशीघ्र आश्रम के ठीक पास बुनियादी ढाँचे का विकास करने तथा अभ्यासी समुदाय सृजन हेतु निर्णयात्मक कदम उठाये जायें ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2014 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.